Newspaper : Amar Ujala
Edition: Delhi | Date: 14th November, 2019 | Pg. : 13

ऐसे स्कूल...जहां होती है पढ़ाई कुछ हट के

आज के दौर में शिक्षा का मतलब केवल किताबों की दुनिया तक ही सीमित रह जाना नहीं है। दुनियाभर में, जिस तरह से मानवीय गतिविधियों में बदलाव आए हैं, उनको देखते हुए हमारी नई पीढ़ी को कुछ नए तरीके से शिक्षा प्रदान करने की जरूरत है, ताकि वे व्यावहारिकता के साथ अपनी समझ विकसित कर सकें और नये विचारों व आविष्कारों को जन्म दे सकें। हमारे देश की ज्यादातर आबादी पारंपरिक शिक्षा पर निर्भर है, जो कि नया सोचने से कोसों दूर नजर आती है। परंतु शिक्षा में नवाचार को लेकर कुछ शिक्षण संस्थानों ने बीड़ा उठाया है। आइए, ऐसे कुछ संस्थानों पर डालते हैं एक नजर...

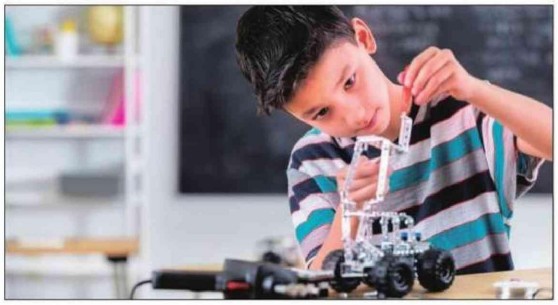

आविष्कार सेंटर ऑफ साइंस, मैथ एंड टैक्नोलॉजी, पालमपुर

हिमाचल प्रदेश के पालमपुर स्थित इस स्कूल के बच्चे छुट्टी वाले दिन का इंतजार खेलने या मस्ती करने के लिए नहीं, बल्कि कुछ खास करने के लिए करते हैं। दरअसल, इस स्कूल में बच्चों को वीकेंड में विज्ञान की पढ़ाई कराई जाती है, और वह भी क्रिएटिव ढंग से। आविष्कार में पढ़ाने वाले शिक्षकों का मानना है कि सरकारी स्कूलों में गणित और साइंस को अच्छे तरीके से नहीं पढ़ाया जाता है और अधिकांश बच्चे घर पर इसकी पढ़ाई भी नहीं कर पाते हैं।

स्कूल के दो खास अध्यापकों का जिक्र करना यहां बेहतर होगा। संध्या और शरत पीएचडी होल्डर हैं और 20 साल तक अमेरिका में रहकर आए हैं। उन्होंने जब इस क्षेत्र में स्कूल के हालात देखे, तो काफी आहत हुए। उन्होंने निर्णय लिया कि वे यहां रहकर ही अलग-अलग तरीके से बच्चों को गणित, भौतिक विज्ञान एवं रसायन विज्ञान की पढ़ाई कराएंगे। इसीलिए उन्होंने छह साल की अपनी बेटी को सरकारी प्राइमरी स्कूल में एडमिशन दिलाया। वे आविष्कार सेंटर ऑफ साइंस, मैथ एंड टैक्नोलॉजी में बच्चों को मॉडल्स के जरिए पढ़ाते हैं और क्रिएटिव तरीके अपनाते हैं। उनसे प्रेरणा लेकर कई विदेशी भी आविष्कार से जुड़ रहे हैं।

लामतापूत उच्च प्राथमिक विद्यालय, ओडिशा

इस विद्यालय के शिक्षक प्रफुल्ल कुमार पाथी का नाम न केवल बच्चों में लोकप्रिय है बल्कि पूरे देश में भी चर्चित रहा है। उन्होंने स्कूल में बच्चों को पढ़ाने का नायाब तरीका निकाला। वे बच्चों को डांस करते हुए पढ़ाते हैं, जो कि बच्चों को बहुत ही रुचिकर लगता है और इसी चलते बच्चे तुरंत सीखते हैं और अगले अध्याय को तैयार करने में भी रुचि लेते हैं। पाथी की 2008 में सर्व शिक्षा अभियान के तहत नियुक्ति हुई थी। इसके बाद से ही उन्होंने बच्चों को पढ़ाने का नायाब तरीका निकाला। उनके इस नायाब तरीके से जहां स्कूल का नाम पूरे देश में वीडियो के वायरल के माध्यम से हुआ है, वहीं स्कूल आने वाले बच्चों की संख्या में भी इजाफा हुआ है और स्कूल छोड़ने वाले बच्चों की संख्या में कमी आई है।

हिमालयन पब्लिक स्कूल, रोहड़ू, हिमाचल

शिमला स्थित हिमालयन पब्लिक स्कूल में बच्चों को पढ़ाने के लिए रोबोट का इस्तेमाल किया जा रहा है। बच्चे क्लास में सवाल पूछते हैं और रोबोट झटपट उनके सही-सही जवाब दे देता है। भारत सरकार द्वारा नीति आयोग के सहयोग से स्कूल में एक रोबोटिक प्रयोगशाला स्थापित की जा रही है। ऐसा पहली बार है कि रोबोट के सहयोग से हिमालयन पब्लिक स्कूल में पढ़ाई शुरू की गई है। प्रोजेक्ट इस बात को ध्यान में रखकर शुरू किया गया है कि बच्चों के सीखने की क्षमता पर रोबोट तकनीक का कितना प्रभाव होता है। अगर यह कारगर रहा, तो स्कूल की सभी कक्षाओं को रोबोटिक तकनीक से लैस किया जाएगा।

प्राथमिक विद्यालय, नयापुरवा, चित्रकूट

इस स्कूल में पढ़ाई को लेकर स्टाफ इतना संजीदा है कि यहां देर शाम तक एक्स्ट्रा क्लास भी चलाई जाती हैं। वर्तमान में विद्यालय में एक प्रधानाचार्य, एक सहायक शिक्षक और एक शिक्षा मित्र तैनात हैं। यहां 100 से ज्यादा बच्चों का रजिस्ट्रेशन है। शायद ही कोई दिन बीतता हो, जब यहां बच्चों की उपस्थिति 100 से नीचे जाती हो। यह विद्यालय नयापुरवा शहर से हटकर देवांगना घाटी के ऊपर छोटे से गांव, दरारी में स्थित है। हालांकि शुरुआत में स्थिति ऐसी नहीं बिल्कुल नहीं थी। बच्चे और दोनों का ध्यान पढ़ाई पर नहीं था। लेकिन धीरे-धीरे हालात बदल गए।